प्राक्कथन

हिन्दी उपन्यास साहित्य में जैनेंद्र कुमार का स्थान महत्वपूर्ण है। क्योंकि हिन्दी उपन्यास का विकास अगर हम देखेंगे तो हमें ज्ञात होगा कि प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास मनोरंजन प्रधान था। उस वक्त के लेखकों ने तिलस्मी ऐयारी उपन्यास साहित्य की रचना की। उसके बाद प्रेमचंदजी का आगमन हुआ। वे तो उपन्यास सम्राट हो गये। उन्होंने सबसे प्रथम प्रयास यह किया कि उपन्यास मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि हमारे सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन की अभिव्यक्ति है, इस बात का अहसास दिलाया और उन्होंने सामाजिक उपन्यास लिखे। उन्होंने अपनी रचना में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद स्थापित किया। उसके बाद हिन्दी उपन्यास साहित्य में बंगला तथा अंग्रेजी के रूपांतरीत उपन्यास आये। इन उपन्यासों पर मनोविश्लेषण शास्त्र का प्रभाव मिलता है। यह प्रभाव माननेवाले पहले उपन्यासकार थे जैनेंद्र कुमार। इन्होंने सबसे पहले पाठकों का ध्यान समाज से हटाकर व्यक्ति पर केंद्रित किया।

मुझे जैनेंद्र कुमार का अध्ययन करने का मौका एम.ए. में मिला। `कल्याणी` उपन्यास से प्रभावित होकर मैंने लेखक की सभी औपन्यासिक कृतियों को पढा। उसके पश्चात मेरे मन में जैनेंद्र साहित्य के बारे में आकर्षण पैदा हो गया।

आज जब मुझे लघु-शोध प्रबन्ध का विषय चुनने का मौका मिला, तो अनायास मेरे सामने `जैनेंद्र कुमार` साकार हो उठे। जब मैंने इस विषय का प्रस्ताव श्रध्देय गुरुवर्य डॉ. मोरेजी के सम्मुख रखा तो आपने हामी भर दी तथा विषय के गहराई के प्रती मुझे सचेत भी किया। अनुसंधान के विषय का शिर्षक `जैनेंद्र के उपन्यासों में अभिव्यक्त नैतिकता` - एक अनुशीलन है।

जैनेंद्र साहित्य पर विभिन्न दृष्टिकोणों से अनुसंधान हुआ है। और इसी विषय को लेकर मैंने अनुसंधान किया है। और सिर्फ नैतिकता को धक्का देनेवाली घटनाओं का संकलन करके उनका विश्लेषण किया है। परंतु जैनेंद्र साहित्य में अभिव्यक्त नैतिकता का स्वतंत्र रूपसे अनुसंधान नहीं हुआ है। इसी कारण उपर्युक्त विषय को मैंने अनुसंधान के लिए चुना है। इस लघु-प्रबन्ध में विशेषकर नैतिकता को धक्का देनेवाली घटनाओं के आधार पर नैतिकता का विचार किया जाएगा।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्न प्रश्न थे।

१) क्या प्रेमचंद पूर्व उपन्यास में नैतिकता का चित्रण है ?
२) प्रेमचंद के उपन्यासों में नैतिकता चित्रण किस प्रकार हुआ है ?
३) प्रेमचंद युगीन अन्य उपन्यासकारों के उपन्यास साहित्य में नैतिकता का चित्रण किस प्रकार हुआ है ?
४) जैनेंद्र पर कौन-कौनसी विचारधाराओं के प्रभाव दिखायी देते हैं ?
५) जैनेंद्र के उपन्यास समाज प्रधान है, या व्यक्ति प्रधान ?
६) जैनेंद्र कुमार ने कौन कौनसे आदर्शों की स्थापना अपने उपन्यासों में की है ?

इन प्रश्नों की सहायता से मैंने जैनेंद्र के उपन्यासों में अभिव्यक्त नैतिकता एक अनुशीलन करने की कोशिश की है।

<u>प्रथम अध्याय</u> - उपन्यासकार जैनेंद्र। व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय दिया है। जिससे पाठकों को लेखक की कृतियों का सामान्य ज्ञान प्राप्त हो।

<u>द्वितीय अध्याय</u> - नैतिकता का अर्थ और स्वरूप। इस अध्याय में नैतिकता का मानदंड देकर नैतिकता का सामान्य परिचय दिया है। साथ ही साथ निम्न बातों का विवेचन है -

१) नैतिकता क्या है ?

२) नैतिकता शब्द और व्याख्या ।

३) सामाजिक नैतिकता ।

४) वैयक्तिक नैतिकता ।

५) उपन्यास रचना और उपन्यासकार का जीवन-दर्शन ।

६) उपन्यासकार की आत्माभिव्यक्ति और सच्चाई ।

७) उपन्यास-रचना और सामाजिक नैतिकता ।

८) उपन्यास का नैतिक व्यवस्था पर प्रभाव ।

९) निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय - इस अध्याय में जैनेंद्र पूर्व उपन्यासों में अभिव्यक्त नैतिकता का सामान्य परिचय दिया है ।

अ) प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में अभिव्यक्त नैतिकता का स्वरूप ।

ब) प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में अभिव्यक्त नैतिकता का स्वरूप ।

इन बातों का परिचय इस अध्याय में दिया है ।

अध्याय चौथा - इस अध्याय में लेखक पर जो विभिन्न प्रभाव हमें दिखायी देते हैं, उनका विवेचन किया है ।

१) जैन दर्शन, गांधी-विचारधारा और जैनेंद्र ।

२) जैनेंद्र पर फ्रायड का प्रभाव ।

३) सार्त्र का जैनेंद्र पर प्रभाव ।

४) जैनेंद्र के प्रेरणा-स्त्रोत - रवीन्द्र ।

५) शरत का जैनेंद्र पर प्रभाव ।

६) जैनेंद्र पर गेस्टाल्टवादी औपन्यासिक तंत्र का प्रभाव ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

अध्याय पाँचवा - जैनेंद्र के उपन्यास और नैतिकता ।

अ) जैनेंद्र के विभिन्न उपन्यासों में नैतिकता को धक्का देनेवाली घटनाओं का परिचय सहित संकलन ।

ब) घटनाओं का विश्लेषण और विवेचन ।

१) अश्लीलता घटना पर निर्भर नहीं ।

२) अश्लीलता और कामोत्तेजक वर्णन ।

३) जैनेंद्र कुमार का साध्य (निर्णय) आदि ।

इस प्रकार विषय का विचार करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे उपसंहार में रखे हैं ।

मेरे इस प्रयास में श्रध्देय गुरुदेव डॉ. वसंत केशव मोरे जी का अध्ययन संपन्न पथ प्रदर्शन बहुत बड़ा सहायक सिध्द हुआ है । अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी श्रध्देय डॉ. मोरे जी ने एक सफल निर्देशक के रूप में मुझ पर जो ऋण किये हैं उससे उऋण हो पाना केवल असम्भव है ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिन्दी विभाग के प्रमुख प्रा. शरद कणबरकर जी साथ ही साथ डॉ. व्ही.व्ही. द्रवीड, प्रा. एम.के. तीवले, प्रा. श्रीमती रजनी भागवत, हिन्दी विभाग प्रमुख शहाजी महाविद्यालय, कोल्हापूर, प्रा. जी.एस. हिरेमठ (विवेकानंद महाविद्यालय, कोल्हापुर) आदि का मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे मार्गदर्शन किया । साथ ही साथ गुरुवर्य प्रा. अरविंद अनंत पोतदार (हिन्दी विभाग प्रमुख, ए.एस.सी. कॉलेज, इचलकरंजी) विवेकानंद महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री. शितोळे बी.ए. तथा शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल प्रा. जे.बी. जाधव तथा श्री. निशीकांत गुरव (सिनियर असिस्टंट ग्रंथपाल, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर) का भी आभारी हूँ । पुणे की डॉ.सिंधू भिंगारकर इन का भी मैं आभारी हूँ ।

भविष्य में भी इन सब लोगों से आशीर्वादमयी सहयोग की कामना करते हुए सुधी समीक्षकों के सामने प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करता हूँ ।

सधन्यवाद

(सुहास आंगापुरकर)
शोध छात्र

कोल्हापुर
दिनांक : 18 मई 1989